विषय प्रवेश

'तबला वादन : कला और शास्त्र' की महत्ता को देखते हुए तबला वादन में 'रियाज़' का बड़ा महत्व है। संगीत कला के सर्वश्रेष्ठ तालवाद्य तबला की सर्वांगीण दृष्टिकोन से हुई उन्नति एवं विकास यह तबले के अभ्यासपूर्ण एवं विचारपूर्ण रियाज़ में ही निहित है। संगीत कला में सर्वव्यापक एवं सर्वसमावेशक ऐसे इस वाद्य का रियाज़ का क्या महत्व है? तथा यह रियाज़ किस प्रकार से होना चाहिए? यें बहुत ही विचारपूर्ण प्रश्न है, ऐसा शोधार्थी का मानना है। अर्थात, इस सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वगुणसंपन्न 'लय–ताल–नाद वाद्य' का रियाज़ भी उतना ही श्रेष्ठतम होगा और होना चाहिए, यह तबलावादक की एक जिज्ञासा होनी चाहिए, जिसका समाधान 'तबले के अभ्यासपूर्ण रियाज़' में है। प्रस्तुत, तबले के रियाज़ के बारे में शोधार्थी को कई असंमजसताएँ थी, जैसे की तबले का रियाज़ करना यानी प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में क्या करना है? तबले का रियाज कैसे करना चाहिए? कौनसी पद्धति है– रियाज़ की? क्या रियाज और अभ्यास यह एक ही है? ऐसी कई बातों से शोधार्थी अनभिज्ञ था और मन के इसी विचार से एक स्फुरण पैदा हुई, जिज्ञासा पैदा हुई की, ऐसे कई मुलभुत बातों से और भी तबला साधक अछूते रहे होंगे और उन्हें भी अब तक कोई समाधानपर जवाब या दिशा निर्देश नहीं मिला होगा–तबले के रियाज़ के बारें में।..... और इसी जिज्ञासा एवं चिकित्सा के आधार पर शोधार्थी के मन में यह विचार आया की क्यों न 'तबले के रियाज़' पर ही एक संशोधनपर कार्य किया जाए? शोधार्थी के मन में उठी इस तरंग ने साकार रूप लिया और परमपिता परमेश्वर की कृपा एवं गुरूजनों के आशीर्वाद सें वह अब पूर्ण रूप में प्रस्तुत हो पायी है।

शोधार्थी के माता–पिता, गुरूजन एवं मार्गदर्शक गुरू, विद्वान–कलाकार इन सभी के शुभ–आशीर्वाद, शुभ कामनाएँ और मार्गदर्शन में यह संशोधनपर कार्य पूर्ण रूप से संपन्न हो पाया है। तबले के रियाज़ के बारें में गुरूजनों के मार्गदर्शन में किए गए प्रस्तुत विवेचन से भविष्य में तबला साधक जरूर लाभान्वित होंगे, उन्हें दिशा निर्देश मिलेगा साथ ही, उनका ज्ञानवर्धन होगा और उन्हें तबले के रियाज़ के बारे में उचित दिशा भी मिलेगी, ऐसा शोधार्थी का विश्वास है। यहीं इस शोध प्रबंध

की सही रूप में सफलता होगी, ऐसा शोधार्थी का मानना है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में अगर कोई कमी रह गयी हो तो वह केवल शोधार्थी के अल्पमति के कारण है, जिसें गुणीजन बड़े मन से स्वीकार करें। अपितु, प्रस्तुत शोध प्रबंध में रहनेवाली कमी यों को भविष्य में कोई शोधार्थी पूरा करें, तो वह स्वागतार्ह है तथा प्रस्तुत शोध प्रबंध का आधार लेकर गर कोई शोधार्थी तबले के रियाज़ के बारें में और भी अधिक कार्य करना चाहे, तो वह बड़े ही गौरव की बात होगी। तबलासाधकों को रियाज़ के बारे में योग्य दिशा बताते हुए, उन्हें सही रूप में मार्गदर्शन करना ही प्रस्तुत शोध–प्रबंध का एक मात्र प्रामाणिक उद्देश्य है।

इसी भुमिका के साथ, तबले के विविध मूर्धन्य कलाकारों, गुरूजनों–विद्वानों के अनुभव एवं विचारों को प्रमुख आधार बनाते हुए शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध प्रबंध में तबले के 'सैध्दांतिक पक्ष' यानी बौध्दिक रियाज़ एवं 'क्रियात्मक पक्ष' यानी शारीरिक रियाज़ के बारें में अपने विचारों को उज़ागर करने का एक प्रयास किया है। तबले के रियाज के बारे में प्रस्तुत शोध प्रबंध की आवश्यकता का महत्व देखते हुए रियाज़ के बारे में उचित निर्देशन का उद्घाटन होना सबसे जरूरी था, अपितु, तबले के रियाज़ के बारे में भविष्य में और भी परिणामकारक तथा विधायक रूप में संशोधनपर कार्य होने की संभावनाओं का जरूर महत्व है, ऐसा शोधार्थी का विश्वास है।

शोधार्थी

सचिन कचोटे